उसका बदलना

वासंती रामचंद्रन

वह एक ऐसे परिवार में पली, बढ़ी जहां पुराने ख्यालों का बोलबाला था। यह नहीं करना, वह नहीं करना। उसे लड़कों से बात करने की इज़ाज़त नहीं थी। आठवीं क्लास से ही उसे साड़ी पहननी पड़ी। सिर्फ ज़रूरी कामों को छोड़कर वह बाहर नहीं जा सकती थी। उसके अंदर एक दहशत भर दी गई थी। उसकी शादी जल्दी कर दी गई। वह मजबूर थी।

अपने परिवार में खूब सारे भाई बहनों का शोरगुल उसे बिलकुल नहीं भाता था। उसके अंदर एक छोटे से सुखी परिवार का सपना पल रहा था।

उसके पति की मामूली आमदनी थी। उसने दो लड़कियों के बाद ऑपरेशन करवाना चाहा। लेकिन सास ने झिड़की दी, "बिना लड़के के बुढ़ापा कैसे कटेगा?"

उसका मन अब और बच्चा पैदा करने के हक़ में नहीं था। एक दिन बाज़ार जाने के बहाने वह परिवार-कल्याण केंद्र गई और कॉपर टी लगवा ली। इसकी ख़बर भी उसने पति को एक साल बाद दी। यह सब उसने पूरे परिवार की भलाई के लिए किया था।

उसकी और बच्चे न होने की रट और बढ़ती मंहगाई को देखकर सास व पति ऑपरेशन के लिए तैयार हो गए। उसकी गृहस्थी अब एक सुखी गृहस्थी है। खाली समय में कुछ काम करके वह घर में आर्थिक सहायता भी कर पाती है।

लड़कियों को वह उतनी ही आज़ादी देती है जो उनकी प्रगति के लिए सहायक है। वह उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने की सीख देती है। उसने लड़कियों को कपड़ों आदि के बारे में पूरी आज़ादी दी है। बस के सफ़र में जीन्स पहनने से सुविधा होती है तो वह उन्हें साड़ी पहनने को मजबूर नहीं करती। बेटियों को खूब पढ़-लिख कर कुछ बनने का चाव है। उसे अपनी बेटियों को देखकर खुशी होती है। जिस आत्म-विश्वास की कमी उसमें थी उसकी बेटियों में नहीं है। □

औरत भी जिंदा इंसान
नहीं भोग की वह सामान